# सत्य एक पथहीन भूमि है

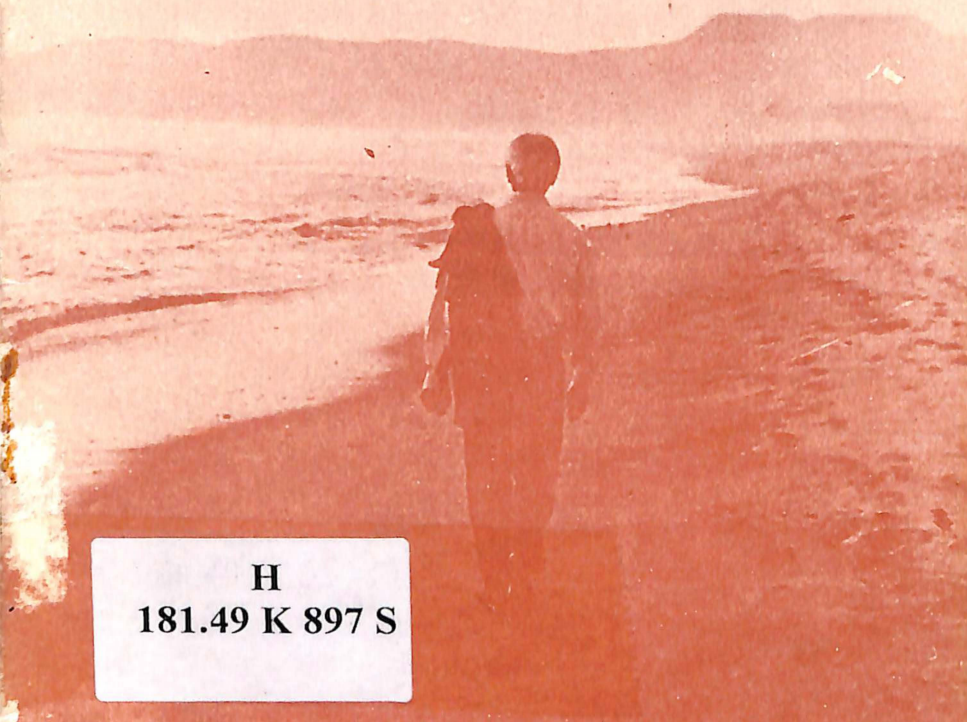

H
181.49 K 897 S

जे. कृष्णमूर्ति

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

# सत्य एक पथहीन भूमि है

**जे० कृष्णमूर्ति**

*अनुवादक:* चैतन्य

जे० कृष्णमूर्ति प्रज्ञा परिषद
कृष्णमूर्ति फ़ाउण्डेशन इण्डिया
राजघाट फ़ोर्ट, वाराणसी

*Satya Ek Patliheen Bhoomi Hai* – J. Krishnamurti

Hindi Translation of a chapter titled *'The Dissolution of the Order of the Star' taken from the book 'The Mind of J. Krishnamurti' edited by Luis S.R. Vas*

*Translated by* : Chaitanya

*Authorised by* : Krishnamurti Foundation India.

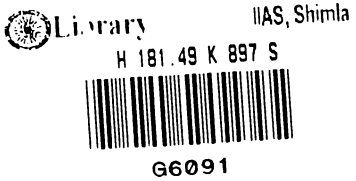


© 1996 Krishnamurti Foundation India
Vasanta Vihar, 64-65, Greenways Road, Chennai 600 028
Email : kfihq@md2.vsnl.net.in

First Reprint in 2000

*Published by*
J. Krishnamurti Prajna Parishad
Krishnamurti Foundation India, Rajghat Fort, Varanasi 221 001
Email : kcentrevns@satyam.net.in

*Printed by*
Sattanam Printers
Pandeypur, Varanasi.

आज सुबह हम 'ऑर्डर ऑव द स्टार' के विघटन पर विचार-विमर्श करेंगे। कई लोग इससे प्रसन्न होंगे, और अन्य कुछ उदास होंगे। लेकिन यह मौका न ही खुशी मनाने का है, न ही उदास होने का, क्योंकि यह तो होना ही है, जैसा कि मैं स्पष्ट करने जा रहा हूँ।

आपको वह कहानी याद होगी कैसे शैतान (Devil) और उसके दोस्त ने रास्ते से गुजरते हुए अपने आगे एक आदमी को देखा जिसने जमीन से कुछ उठाया, उसे देखा और फिर अपनी जेब में रख लिया। मित्र ने शैतान से पूछा— 'उस आदमी ने क्या उठाया?' 'उसने सत्य को उठाया है' शैतान का जवाब था। मित्र ने कहा— 'तब तो यह तुम्हारे लिए अच्छी बात नहीं'। शैतान ने जवाब दिया, 'बिल्कुल नहीं, लेकिन मैं इस सत्य को उससे संगठित करवा दूँगा।'

मैं यह मानता हूँ कि सत्य एक पथहीन भूमि है, और आप किसी भी पथ के द्वारा, किसी भी धर्म के द्वारा, किसी भी सम्प्रदाय के द्वारा उस तक नहीं पहुँच सकते। यह मेरा दृष्टिकोण है और मैं परम रूप से

बिना किसी शर्त के इस पर अडिग हूँ। सत्य असीमित और अप्रतिबन्धित है तथा किसी भी मार्ग से उस तक नहीं पहुँचा जा सकता। इसलिए सत्य को संगठित नहीं किया जा सकता। न ही लोगों का नेतृत्व करने के लिए या फिर उन्हें डरा-धमका कर किसी रास्ते पर चलाने के लिए किसी संगठन का निर्माण किया जाना चाहिए। यदि आप पहले यह समझ लें तो आप देखेंगे कि किसी विश्वास (belief) को संगठित करना कितना असंभव है। विश्वास पूरी तरह से एक व्यक्तिगत मामला है, आप इसे संगठित नहीं कर सकते और न ही आपको इसे कभी संगठित करना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं तो यह (सत्य) मर जाता है, बँध जाता है, यह एक पंथ, एक सम्प्रदाय, एक धर्म बन जाता है जिसे दूसरों पर थोपा जा सके। पूरी दुनिया में हर व्यक्ति यही करने की कोशिश कर रहा है। सत्य को संकीर्ण बना दिया जाता है और जो कमजोर हैं, जो सिर्फ़ क्षणिक तौर पर असंतुष्ट हैं, उनके लिए इसे एक खिलौना बना दिया जाता है। सत्य को नीचे नहीं उतारा जा सकता। व्यक्ति को ऊपर उठकर उस तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए। आप पर्वत-शिखर को घाटी में नहीं उतार सकते। यदि आपको पर्वत के शिखर तक पहुँचना है तो आपको घाटी से होकर गुजरना पड़ेगा, ख़तरनाक चट्टानों से भयभीत हुए बग़ैर ऊँचाइयों तक चढ़ाई करनी पड़ेगी। आपको सत्य की ऊँचाई की तरफ बढ़ना होगा। सत्य को, आपके लिए, नीचे नहीं उतारा जा सकता, और न ही इसे संगठित किया जा सकता है। विचारों में रुचि को मुख्य रूप से संगठन ही जीवित रखते हैं, लेकिन संगठन सिर्फ़ बाहर

से ही रुचि जगाते हैं। जो रुचि सत्य के प्रति प्रेम के फलस्वरूप उत्पन्न न होकर किसी संगठन के द्वारा जगायी जाए, उसका कोई मूल्य नहीं। फिर संगठन एक ऐसा ढाँचा बन जाता है, जिसमें उसके सदस्य सुविधापूर्वक अपनी जगह बना सकें। वे सत्य के या पर्वत-शिखर के लिए व्याकुल नहीं होते, बल्कि अपने लिए एक सुविधाजनक स्थान बना लेते हैं जिसमें वे स्वयं को स्थापित कर सकें या फिर संगठन ही उनके लिए ऐसे स्थान बना दे। वे सोचते हैं कि इस तरह संगठन उन्हें सत्य तक पहुँचा देंगे।

इसलिए मेरे विचार से यह पहला कारण है 'ऑर्डर ऑव द स्टार' को भंग करने का। इसके बावजूद आप शायद दूसरे संगठन बना लें, आप उन अन्य संगठनों से जुड़े रहें जो सत्य की खोज कर रहे हैं। कृपया आप समझ लें कि मैं आध्यात्मिक ढंग से किसी भी संगठन से जुड़ना नहीं चाहता। मैं एक ऐसे संगठन का उपयोग करूँगा जो, उदाहरण के लिए, मुझे लंदन ले जाए। लेकिन यह एक बिल्कुल अलग तरह का संगठन होगा, सिर्फ़ यांत्रिक, डाक या तार जैसा। यात्रा के लिए मैं मोटरकार या जहाज़ का उपयोग करूँगा। ये सिर्फ़ भौतिक साधन हैं जिनका आध्यात्मिकता के साथ कोई संबंध नहीं। एक बार फिर मैं कहता हूँ कि कोई भी संगठन मनुष्य को आध्यात्मिकता की ओर नहीं ले जा सकता।

यदि इस उद्देश्य से कोई संगठन बनाया जाता है तो वह एक बैसाखी, एक कमजोरी, एक बंधन बन जाएगा और वह अवश्य ही

व्यक्ति को अपंग बना देगा तथा उसे विकसित होने से, उसके अपने अनूठेपन को साबित करने से रोक देगा। अनूठापन है स्वयं ही उस परम, अप्रतिबन्धित सत्य का आविष्कार करना। ऑर्डर के प्रमुख की हैसियत से इसे भंग करने के मेरे निर्णय का यह दूसरा कारण है। किसी ने भी मुझे इस निर्णय के लिए प्रेरित नहीं किया है।

यह कोई शानदार कार्य नहीं, क्योंकि मैं अनुयायी नहीं चाहता और मैं जानकर ऐसा कह रहा हूँ। जैसे-ही आप किसी व्यक्ति का अनुसरण करना शुरू करते हैं, सत्य का अनुसरण समाप्त हो जाता है। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मैं जो कह रहा हूँ उस पर आप ध्यान दे रहे हैं या नहीं। मैं संसार में एक ख़ास काम करने जा रहा हूँ और मैं निश्चल एकाग्रता के साथ इसे करूँगा। मैं ख़ुद को सिर्फ़ एक अति-आवश्यक वस्तु से सम्बन्धित मानता हूँ— मनुष्य को मुक्त करने से। मैं उसे सभी पिंजरों से, हर प्रकार के भय से मुक्त करना चाहता हूँ। मैं नये धर्मों, नये सम्प्रदायों, नयी विचारधाराओं या दर्शन-प्रणालियों की स्थापना करना नहीं चाहता। स्वाभाविक है कि आप मुझसे पूछेंगे कि फिर मैं लगातार बोलता हुआ सारी दुनिया में क्यों घूमता हूँ। मैं आपको बताऊँगा कि मैं ऐसा किसलिए करता हूँ। इसलिए नहीं कि मुझे अनुयायियों की ज़रूरत है; इसलिए भी नहीं कि मैं विशेष तरह के शिष्यों का एक विशेष तरह का समूह चाहता हूँ। मनुष्य अपने साथियों से अलग दिखना पसंद करता है, भले ही यह फ़र्क कितना ही हास्यास्पद, निरर्थक और तुच्छ क्यों न हो और मैं इस बेवकूफ़ी को बढ़ावा नहीं देना चाहता।

मेरे कोई शिष्य नहीं, कोई दूत नहीं—न ही इस धरती पर और न ही आध्यात्मिकता के क्षेत्र में।

मुझे न तो धन का लोभ है, न ही आरामदायक जीवन बिताने की इच्छा। यदि मैं आरामदायक जीवन बिताना चाहता तो मैं इस शिविर में नहीं आता, न ही एक सीलन भरे देश में रहता। मैं साफ़ -साफ़ बोल रहा हूँ ताकि हमेशा के लिए सब कुछ साफ़ हो जाए। मैं नहीं चाहता कि साल-दर-साल इसी तरह की बचकाना बातें होती रहें।

मेरा इंटरव्यू लेने वाले एक संवाददाता ने कहा कि एक ऐसे संगठन को भंग करना जिसमें हजारों-हजार सदस्य हों, बड़ा-ही शानदार काम है। उसके लिए यह एक महान काम था। उसने कहा, 'आप बाद में क्या करेंगे, आप कैसे जिएँगे? आप के अनुयायी नहीं रहेंगे, लोग अब आपको सुनने भी नहीं आएँगे'। सुनने वाले, जीने वाले, शाश्वत-अभिमुख यदि सिर्फ़ पाँच लोग भी हों, तो यह काफी है। ऐसे हजारों लोगों से क्या फायदा जो समझते नहीं, जो पूर्वाग्रहों में पूरी तरह लिपटे हुए हैं, जो नये की इच्छा नहीं रखते, बल्कि अपने प्राण-विहीन और जड़ अहम् के अनुसार ही नवीनता को दूसरे रूप में बदल देते हैं? यदि मैं कड़े शब्दों में बोल रहा हूँ तो कृपया ग़लत न समझें। करुणा के अभाव के कारण मैं ऐसा नहीं कर रहा। यदि आप किसी सर्जन के पास आपरेशन के लिए जाते हैं तो क्या वह आपका आपरेशन करके कृपा नहीं करता—चाहे आपरेशन कितना ही कष्टदायक क्यों न हो? इसी तरह, यदि मैं सीधी बात करूँ तो वास्तविक स्नेह के अभाव के कारण ऐसा नहीं, बल्कि इसका उल्टा है।

जैसा कि मैंने कहा, मेरा एक-ही उद्देश्य है: मनुष्य को मुक्त करना, स्वतंत्रता की ओर बढ़ने का उससे आग्रह करना, सारी सीमाओं को तोड़ने में उसकी मदद करना— क्योंकि इसी से उसे शाश्वत सुख मिल सकेगा; यही उसे आत्म का अप्रतिबन्धित ज्ञान प्राप्त कराएगा।

चूँकि मैं मुक्त, अप्रतिबन्धित, पूर्ण हूँ— अंश या सापेक्ष नहीं, बल्कि पूर्ण शाश्वत सत्य हूँ— मैं चाहता हूँ कि जो मुझे समझना चाहते हैं वे स्वतंत्र हों। वे मेरा अनुकरण न करें, मुझे एक पिंजरा न बना लें जो कि एक धर्म, एक सम्प्रदाय में बदल जाए। बल्कि उन्हें हर प्रकार के भय से मुक्त होना चाहिए— धर्म के भय से, मुक्ति के भय से, आध्यात्मिकता, प्रेम, मृत्यु और स्वयं जीवन के भय से भी। जिस तरह एक कलाकार किसी तस्वीर में रंग भरता है क्योंकि उसे इसमें आनन्द मिलता है, क्योंकि इसमें उसकी आत्माभिव्यक्ति है, शान है, उसकी रुचि है— उसी तरह मैं यह काम कर रहा हूँ। इसलिए नहीं कि मुझे किसी से कुछ चाहिए।

आपको सत्ता (authority) की या सत्ता से जुड़े माहौल की आदत पड़ गयी है और आप सोचते हैं कि इससे आप सत्य तक पहुँच जाएँगे। आप सोचते हैं और आशा करते हैं कि दूसरा कोई अपनी असाधारण शक्ति, चमत्कार के द्वारा आपको शाश्वत स्वतंत्रता के उस क्षेत्र तक ले जाएगा जहाँ परम आनन्द है। जीवन के प्रति आपका पूरा दृष्टिकोण उसी सत्ता पर आधारित होता है।

आप करीब तीन वर्ष से मुझे सुन रहे हैं, लेकिन एकाध लोगों को छोड़ कर किसी में भी कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता। अब मैं जो कह रहा हूँ उसका विश्लेषण करें, आलोचना करें ताकि आप पूरी तरह से, मौलिक रूप से उसे समझ लें। जब स्वयं को आध्यात्मिकता की ओर ले जाने के लिए आप किसी सत्ता का मुँह ताकते हैं, तब आप स्वाभाविक रूप से उस सत्ता के इर्द-गिर्द एक संगठन का निर्माण करने के लिए बाध्य होते हैं। आपके मुताबिक वह संगठन आपको आध्यात्मिकता की ओर ले जाने में इस सत्ता की मदद करेगा। लेकिन इस संगठन का निर्माण करके आप स्वयं को एक पिंजरे में बंद कर लेते हैं।

यदि मैं साफ़-साफ़ कहूँ तो कृपया याद रखें कि मैं कठोरता, क्रूरता या अपने मक्सद के प्रति अति उत्साह के कारण ऐसा नहीं कर रहा बल्कि मैं चाहता हूँ कि जो मैं कह रहा हूँ उसे आप समझें। यही कारण है आपके यहाँ मौजूद होने का। और यदि मैं साफ़-साफ़, निश्चित तौर पर अपने दृष्टिकोण को आपके सामने नहीं रखता तो यह सिर्फ़ समय की बरबादी होगी।

अठारह वर्ष से आप इस मौके के लिए, जगद्गुरु के आगमन के लिए तैयारी कर रहे हैं। अठारह वर्ष तक आपने संगठन का कार्य किया है, आपने ऐसे किसी व्यक्ति का इंतज़ार किया है जो आपके दिलो-दिमाग़ को एक नयी ख़ुशी देगा, जो आपके सम्पूर्ण जीवन को बदल देगा, जो आपको एक नयी समझ देगा । ऐसा व्यक्ति जो आपको जीवन के एक नये स्तर तक उठा सके, जो आपको एक नया उत्साह

दे, जो आपको मुक्त करे— लेकिन देखिए ज़रा कि अब क्या हो रहा है! विचार कीजिए, स्वयं से तर्क कीजिए और पता लगाइए कि किस तरह उस विश्वास ने आपको बदला है। बिल्ला लगाने भर का छिछला परिवर्तन नहीं, जो कि तुच्छ और निरर्थक है। बल्कि किस तरह उस विश्वास ने आपके जीवन की ग़ैर-ज़रूरी चीज़ों को दूर हटाया है? आकलन करने का यही एकमात्र तरीका है: किस तरह से आप ज़्यादा मुक्त, तथा मिथ्या एवं अनावश्यक चीज़ों पर आधारित प्रत्येक सामाजिक ढाँचे के लिए अधिकाधिक ख़तरनाक हुए हैं? किस हद तक स्टार-संगठन के सदस्य भिन्न हुए हैं?

जैसा कि मैंने कहा, आप अठारह वर्ष से मेरे लिए तैयारी कर रहे हैं। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मेरे जगद्गुरु होने पर आप विश्वास करते हैं या नहीं। इस बात का कोई महत्त्व नहीं। चूँकि आप 'ऑर्डर ऑव द स्टार' नाम के संगठन से जुड़े हुए हैं, आपने अपनी सहानुभूति और ऊर्जा इसे दी है और स्वीकार किया है कि कृष्णमूर्ति जगद्गुरु हैं, आंशिक या पूर्ण रूप से। पूर्ण रूप से उनके लिए जो वास्तव में खोज रहे हैं, और आंशिक रूप से सिर्फ़ उनके लिए जो अपने खुद के अर्द्ध-सत्यों से संतुष्ट हैं।

आप अठारह वर्ष से तैयारी कर रहे हैं और ज़रा देखिए कि आपकी समझ के रास्ते में कितनी कठिनाइयाँ हैं, कितनी पेचीदगियाँ और कितनी तुच्छ चीजें हैं। आपके पूर्वाग्रह, आपके भय, आपकी सत्ता, आपके नये-पुराने चर्च— मेरा मानना है कि ये सभी समझ के मार्ग में

बाधक हैं। मैं अपनी बात को इससे अधिक स्पष्ट नहीं कर सकता। मैं यह नहीं चाहता कि आप मुझसे सहमत हों। मैं यह नहीं चाहता कि आप मेरे अनुयायी बनें। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बातों को समझें।

यह समझ बहुत ज़रूरी है क्योंकि आपके विश्वास ने आपको बदला नहीं है बल्कि आपको ज़्यादा जटिल बना दिया है, और इसलिए कि आप चीज़ों को उनके यथार्थ रूप में देखना नहीं चाहते हैं। आप चाहते हैं कि आपके अपने देवता हों— पुराने की जगह नये, पुराने धर्मों की जगह नये धर्म, पुराने ढाँचों की जगह नये ढाँचें। लेकिन ये सभी समान रूप से बेकार हैं— सभी बाधाएँ हैं, सीमाएँ हैं, बैसाखियाँ हैं। पुरानी आध्यात्मिक उपाधियों के बदले अब आपके पास नयी आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हैं। पुरानी पूजा-पद्धतियों की जगह अब नयी तरह की पूजाएँ हैं। आप सभी अपनी आध्यात्मिकता के लिए किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर हैं, अपनी ख़ुशी के लिए , अपने बोध के लिए आप किसी और पर अवलम्बित हैं और हालाँकि आप अठारह वर्ष से मेरे लिए तैयारी कर रहे हैं, लेकिन जब मैं कहता हूँ कि आप इन सभी चीज़ों को एक ओर हटा दें और बोध के लिए, भव्यता के लिए, निर्मलता के लिए और स्व (self) की निष्कलुषता के लिए स्वयं के अन्दर झाँक कर देखें, तो आप में से एक व्यक्ति भी ऐसा करने के लिए तैयार नहीं होता। हो सकता है कुछ लोग हों, लेकिन वे बहुत-ही कम लोग होंगे।

तो संगठन क्यों ज़रूरी है?

क्यों झूठे और पाखंडी लोग मेरे, अथवा सत्य या उसके साकार रूप के अनुयायी हों? कृपया याद रखें कि मैं कोई कठोर या क्रूर बात नहीं कह रहा, लेकिन हमलोग ऐसी स्थिति में पहुँच गये हैं जहाँ आपको चीज़ों का उनके वास्तविक रूप में सामना करना ही पड़ेगा। मैंने पिछले साल कहा था कि मैं समझौता नहीं करूँगा। उस समय थोड़े लोगों ने ही मेरी बात सुनी। इस साल मैंने यह पूरी तरह से साफ़ कर दिया है। मैं नहीं जानता कि दुनिया भर में कितने हजार ऑर्डर के सदस्य मेरे लिए अठारह साल से तैयारियाँ कर रहे हैं। इसके बावजूद मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसे बिना शर्त, पूर्ण रूप से सुनने के लिए वे तैयार नहीं हैं।

तो फिर संगठन रखा ही क्यों जाए?

जैसा कि मैंने पहले कहा, मेरा उद्देश्य है मनुष्य को बग़ैर किसी शर्त के मुक्त करना, क्योंकि मैं मानता हूँ कि आध्यात्मिकता का अर्थ है स्व की निष्कलुषता, जो कि शाश्वत है, जिसका अर्थ है बुद्धि (reason) और प्रेम के बीच समस्वरता। यही परम, अप्रतिबन्धित सत्य है जो स्वयं जीवन का ही नाम है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मनुष्य को मुक्त कर दूँ— खुले गगन में पंछी की तरह आनन्दित, भारमुक्त, स्वतंत्र, और उस स्वतंत्रता में आह्लादित। और मैं, जिसके लिए आप आठारह साल से तैयारियाँ कर रहे हैं, अब कह रहा हूँ कि आपको इन सभी चीज़ों से अवश्य-ही मुक्त होना चाहिए , अपनी जटिलताओं से, अपने

बंधनों से। इसके लिए आपको आध्यात्मिक विश्वास पर आधारित किसी संगठन की ज़रूरत नहीं। संसार में पाँच-दस लोगों के लिए , जो समझते हैं, जो संघर्ष कर रहे हैं, जिन्होंने तुच्छ चीज़ों को परे हटा दिया है, संगठन की क्या ज़रूरत है? और जहाँ तक कमजोर लोगों का सवाल है , उन्हें सत्य ढूँढ़ने में मदद करने के लिए कोई संगठन नहीं हो सकता, क्योंकि सत्य हर व्यक्ति में है। यह दूर नहीं, यह पास भी नहीं। यह हमेशा शाश्वत रूप से है।

संगठन आपको स्वतंत्र नहीं कर सकते। बाहर से कोई भी आपको स्वतंत्र नहीं बना सकता, न ही संगठित पूजा, न ही किसी उद्देश्य के लिए आत्म-बलिदान आपको मुक्त कर सकता है। न ही संगठन बनाकर और न ही कुछ कामों में स्वयं को लगाकर आप मुक्त हो सकते हैं। आप चिट्ठियाँ लिखने के लिए टाइपराइटर का उपयोग करते हैं लेकिन उसे वेदी पर रखकर आप उसकी पूजा नहीं करते। लेकिन जब संगठन आपकी मुख्य चिंता बन जाते हैं, तब आप यही करते हैं। 'संगठन में कितने सदस्य हैं?' संवाददाता मुझसे पहला सवाल यही करते हैं। 'आप के कितने समर्थक हैं? उनकी संख्या देखकर ही हम यह फ़ैसला करेंगे कि आप जो कह रहे हैं वह सच है या झूठ।' मैं नहीं जानता कि कितने हैं। मुझे इसकी परवाह नहीं। जैसा कि मैंने कहा यदि सिर्फ़ एक ही व्यक्ति हो जो मुक्त हो, तो यही काफ़ी है।

इसके अलावा, आपका यह भी विचार है कि कुछ लोगों के पास ही सुख के साम्राज्य की चाभी है। कोई चाभी को रखने का हक़दार

नहीं। चाभी है आपका ख़ुद का स्व और उस स्व के विकास, उसकी शुद्धता और निष्कलुषता में ही शाश्वतता का साम्राज्य है।

तो आप देखेंगे कि यह पूरा ढाँचा, जो आपने तैयार किया है, कितना निरर्थक है— बाहरी मदद का आसरा देखना, अपने सुख, अपनी ख़ुशी, अपनी क्षमता के लिए दूसरों पर निर्भर रहना। इन सारी चीज़ों को आप सिर्फ़ अपने भीतर ही पा सकते हैं।

तो फिर संगठन की क्या ज़रूरत है?

लेकिन जो वास्तव में समझने की इच्छा रखते हैं और उसे समझना चाहते हैं जो शाश्वत है, अनादि-अनंत है, वे मन में अधिकाधिक तीव्रता लिए हुए साथ-साथ चलेंगे। वे ऐसी हर चीज़ के लिए ख़तरा बन जाएँगे जो अनावश्यक है, जो अवास्तविक है, परछाँई-मात्र है। और वे एकाग्रचित्त होंगे, वे एक ज्वाला बन जाएँगे, क्योंकि वे समझेंगे। ऐसा एक समूह हमें ज़रूर बनाना चाहिए, और यह मेरा उद्देश्य है। उनमें वास्तविक समझ के कारण सच्ची मैत्री होगी। सच्ची मैत्री के कारण— जिसका कि शायद आपको पता नहीं— प्रत्येक व्यक्ति वास्तविक सहयोग करेगा। और ऐसा किसी सत्ता के कारण, मोक्ष या किसी उद्देश्य के लिए, अथवा आत्म-बलिदान के कारण नहीं होगा, बल्कि इसलिए होगा क्योंकि आप वास्तव में समझते हैं और इसलिए शाश्वतता में रहने के योग्य हैं। सारे सुखों, सभी बलिदानों से यह ज़्यादा महान वस्तु है।

इसलिए ये कुछ कारण हैं कि दो साल तक सावधानीपूर्वक विचार करने के पश्चात् मैंने यह निर्णय किया है। क्षणिक आवेश में यह निर्णय नहीं हुआ है। मुझे किसी ने इस निर्णय के लिए समझाया-बुझाया नहीं है— ऐसी बातों के लिए मुझे कोई समझा-बुझा नहीं सकता। दो साल से मैं इस बारे में सोच रहा हूँ— आहिस्ता-आहिस्ता, सावधानीपूर्वक, धैर्यपूर्वक— और अब मैंने फ़ैसला किया है कि मैं ऑर्डर को भंग कर दूँगा क्योंकि मैं संयोग से इसका प्रमुख हूँ। आप दूसरे संगठन बना सकते हैं तथा किसी और से आशा कर सकते हैं। उससे मेरा कोई मतलब नहीं। नये पिंजरों के निर्माण से, उन पिंजरों की नयी सजावट से मेरा कोई संबंध नहीं। मेरा सरोकार है सिर्फ़ मनुष्य को परम रूप से, बिना किसी शर्त के मुक्त करने से।

*— जे० कृष्णमूर्ति*

*'सत्य एक पथहीन भूमि है'* — इस ऐतिहासिक वक्तव्य के साथ जे० कृष्णमूर्ति ने 'आर्डर आव द स्टार' नाम के विशाल अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को भंग कर दिया था। जगत्गुरु (वर्ल्ड टीचर) के रूप में प्रतिष्ठित जे० कृष्णमूर्ति उस संगठन के प्रधान थे। इसके बाद स्वतन्त्र रूप से वे आजीवन पूरी दुनिया का दौरा करते रहे, सार्वजनिक वार्त्ताएँ, वार्त्तालाप और परस्पर संवाद करते हुए उन्होंने अपना सारा जीवन मनुष्य के उसके प्रतिबन्धनों और उनसे मुक्ति के प्रति सचेत करने के लिए समर्पित किया। उन्होंने यह भूमिका सत्य के प्रेमी और एक मित्र के रूप में निभाई, गुरु के रूप में उन्होंने स्वयं को कभी नहीं रखा। ३ अगस्त सन् १९२९ में ओमेन, हॉलैण्ड में दिया गया यह दुर्लभ संभाषण अपने-आप में विलक्षण है, और सत्य के अन्वेषकों के समक्ष एक कालातीत चुनौती प्रस्तुत करता है।

Library IIAS, Shimla
H 181.49 K 897 S
G6091

मूल्य : रुपये 10/-